वरिष्ठ अध्यापक GK
GGD
Gourav Gyan Dhara
लक्ष्यभेदी बैच
CLASS-24
जनसंख्या वितरण
प्रमुख मानव व्यवसाय
पढ़ेंगे NEXT LEVEL से

प्रमुख मानव व्यवसाय,जनसंख्या वितरण और प्रवास

प्राथमिक क्रियाएँ

* मानव के वें क्रियाकलाप जिनसे आय प्राप्त होती है, कहलाते हैं - आर्थिक क्रियाकलाप
* आर्थिक क्रियाओं को मुख्यतः कितने वर्गों में विभाजित किया जाता है - 4 वर्गों में (प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक और चतुर्थ क्रिया)
* प्राथमिक क्रियाएँ प्रत्यक्ष रूप से निर्भर है - पर्यावरण पर
* प्राथमिक क्रियाओं में शामिल हैं - आखेटन, भोजन संग्रह, कृषि कार्य, पशुचारण, मछली पकड़ना, वनों से लकड़ी काटना, खनन कार्य आदि

आखेट एवं भोजन संग्रह

NCERT ✓

* विश्व की प्राचीनतम ज्ञात आर्थिक क्रियाएँ हैं- भोजन संग्रह व आखेटन
* आदिम कालीन मानव द्वारा जीवन निर्वाह हेतु किए जाने वाले दो कार्य -

(1) पशुओं का आखेटन (2) जंगलों से खाने योग्य जंगली पौधे व कंदमूल को इकट्ठा करना।

* प्राचीन काल में आखेटक किन औजारों का प्रयोग करते थे - पत्थर या लकड़ी के बने औजारों का

रोटी-कपड़ा-मकान

* आदिमानव पशुओं एवं वनस्पति का संग्रह किस उद्देश्य से करते थे - भोजन, वस्त्र एवं शरण की आवश्यकता पूर्ति हेतु
* नोट-आदिमानव द्वारा यह कार्य कम पूंजी एवं निम्न स्तरीय तकनीकी ज्ञान के माध्यम से किया जाता था तथा इसमें प्रति व्यक्ति उत्पादकता भी कम होती थी।
* विश्व में भोजन संग्रह किए जानें वाले दो भाग -
* उच्च अक्षांश के क्षेत्र - उत्तरी कनाडा, उत्तरी यूरेशिया एवं दक्षिणी चिली।
* निम्न अक्षांश के क्षेत्र - अमेजन बेसिन, उष्णकटिबंधीय अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण-पूर्वी एशिया का आंतरिक प्रदेश।

विशेष - वर्तमान समय में भोजन संग्रह के कार्य का व्यापारीकरण भी हुआ है। आज इन पौधों की पत्तियां, छाल और औषधीय पौधों का अलग-अलग उपयोग किया जाता है जैसे- दवाइयाँ, कांतिवर्धक वस्तुएँ, कपड़ा, तेल, रबड़, गोंद, कुनैन, चमड़ा आदि तैयार किए जाते हैं।

रोचक

* च्युइंगम को चूसने के बाद शेष बचे भाग को क्या कहते हैं - चिकल

* नोट- यह जेपोटी वृक्ष के दूध से बनता है।

पशुचारण

* भौगोलिक कारको और तकनीकी विकास के आधार पर पशुचारण कितने प्रकार का होता है - दो प्रकार का (चलवासी पशुचारण व वाणिज्य पशुधन पालन)

❖ **चलवासी पशुचारण की प्रमुख विशेषताएँ–**

- यह प्राचीनकाल से चला आ रहा जीवन निर्वाह व्यवसाय हैं।
- इसमें पशुचारक अपने भोजन, वस्त्र, औजार व यातायात के लिए पशुओं पर निर्भर रहता था।
- पानी एवं चरागाह की उपलब्धता एवं गुणवत्ता के अनुसार ये पशुचारक अपने पशुओं के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित होते रहते है।
  - नए चरागाह की खोज में ये पशुचारक समतल भागों व पर्वतीय क्षेत्रों में लंबी दूरी तय करते हैं।
  - पर्वतीय क्षेत्रों में ये पशुचारक गर्मियों में मैदानी भाग से पर्वतीय चरागाह की ओर प्रवास करते हैं।
  - शीत ऋतु में ये पशुचारक पर्वतीय भाग से मैदानी चरागाहों की ओर प्रवास करते हैं।
  - टुंड्रा प्रदेश में ग्रीष्म काल में ये पशुचारक दक्षिण से उत्तर की ओर प्रवास करते हैं।
  - टुंड्रा प्रदेश में शीत ऋतु में ये पशुचारक उत्तर से दक्षिण की ओर प्रवास करते हैं।

❖ मौसम के अनुसार पशुचारको द्वारा स्थान परिवर्तन की इन गतिविधियों को कहा जाता है – **ऋतु प्रवास**

❖ हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में ऋतु प्रवास करने वाले प्रमुख पशुचारक समूह – **गुज्जर, बकरवाल, गद्दी, भूटिया** आदि

❖ **विश्व के विभिन्न भागों में पशुचारको द्वारा पाले जाने वाले प्रमुख पशु–**

- उष्णकटिबंधीय क्षेत्रो में – **गाय और बैल**
- सहारा व एशिया के मरुस्थल में – **भेड़, बकरी एवं ऊंट**
- तिब्बत एवं इंडीज के पर्वतीय भागों में – **याक व लामा**
- आर्कटिक और उप उत्तरी ध्रुवीय क्षेत्रों में – **रेनडियर**

❖ **चलवासी पशुचारण के तीन प्रमुख क्षेत्र हैं –**

- उत्तरी अफ्रीका के अटलांटिक तट से अरब प्रायद्वीप होते हुए मंगोलिया एवम मध्य चीन तक।
- यूरोप और एशिया के टुंड्रा प्रदेश।
- दक्षिणी गोलार्ध में दक्षिण पश्चिम अफ्रीका व मेडागास्कर द्वीप।

❖ **वर्तमान में चलवासी पशुचारकों की संख्या घट रही है तथा इनके द्वारा उपयोग लाया गया क्षेत्र भी कम हो रहा है, जिसका कारण है–**

- राजनीतिक सीमाओं का अधिरोपण।
- कई देशों द्वारा नई बस्तियों की योजना बनाना।

❖ **वाणिज्य पशुधन पालन की प्रमुख विशेषताएँ–** → बड़े बड़े फार्म

- यह पशुधन पालन अधिक व्यवस्थित एवं पूंजी प्रधान है।
- इसमें विशाल क्षेत्र पर फैले फार्म स्थाई होते हैं।
- इसमें संपूर्ण क्षेत्र को छोटी–छोटी इकाइयों में बांट दिया जाता है तथा एक क्षेत्र की घास समाप्त हो जाने पर पशुओं को दूसरे क्षेत्र में ले जाया जाता है।
- इसमें पशुओं की संख्या चरागाह की वहन क्षमता के अनुसार रखी जाती है।
- इसमें केवल एक ही प्रकार के पशु पाले जाते हैं।
- इसमें पशुधन पालन वैज्ञानिक आधार पर व्यवस्थित किया जाता है।

मशीनें

❖ वाणिज्य पशुधन पालन वाले प्रमुख क्षेत्र –**ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, अर्जेंटीना, उरुग्वे, संयुक्त राज्य अमेरिका आदि**

कृषि

- विश्व के विभिन्न भागों में कृषि कार्य को प्रभावित करती हैं
  – **भौतिक, सामाजिक एवं आर्थिक दशाएँ**
- विश्व में कृषि की प्रमुख पद्धतियाँ – **निर्वाह कृषि, रोपण कृषि, विस्तृत वाणिज्य कृषि, मिश्रित कृषि, डेयरी कृषि, भूमध्यसागरीय कृषि, उद्यान कृषि, सहकारी कृषि, सामूहिक कृषि आदि।**

निर्वाह कृषि

- वह कृषि जिसमें स्थानीय कृषि उत्पादों के लगभग संपूर्ण भाग का उपयोग किया जाता है, कहलाती है–**निर्वाह कृषि**
- निर्वाह कृषि को कितने भागों में बांटा जा सकता है– दो भागों में (**आदिकालीन निर्वाह कृषि और गहन निर्वाह कृषि**)
- आदिम निर्वाह कृषि का अन्य नाम–**स्थानांतरित कृषि**

- स्थानांतरित कृषि मुख्यत: की जाती है–**भारी वर्षा और वनस्पति के तीव्र पुनर्जनन वाले क्षेत्र में**
- विश्व में स्थानांतरित कृषि के प्रमुख क्षेत्र– **उष्णकटिबंधीय अफ्रीका, दक्षिण-पूर्व एशिया, दक्षिण व मध्य अमेरिका का उष्णकटिबंधीय भाग, उत्तरी–पूर्वी भारत।**
- **स्थानांतरित कृषि की प्रमुख विशेषताएँ–**
  - स्थानांतरित कृषि में वृक्षों को काटकर और जलाकर भूखंड को साफ किया जाता है।
  - राख मृदा की उर्वरता को बढ़ाती है।
  - भूमि की उर्वरता की समाप्ति पश्चात नई जगह साफ करके कृषि की जाती है।
  - इसे कर्तन व दहन कृषि के नाम से भी जानते हैं।
  - इसमें मुख्यतया मक्का, रतालू, आलू और कसावा जैसी फसलों को उगाया जाता है।
  - इसमें पुराने औजारों (लकड़ी, कुदाली, फावड़े आदि) द्वारा कृषि की जाती है।
- गहन निर्वाह कृषि कितने प्रकार की होती है– **दो प्रकार की (चावल प्रधान व चावल रहित गहन निर्वाह कृषि)**

राख

❖ **गहन निर्वाह कृषि की प्रमुख विशेषताएँ–**

- यह छोटे भूखंड पर की जाने वाली कृषि है।
- साधारण औजार और अधिक मानव श्रम का उपयोग।
- एक वर्ष में एक से अधिक फसलें उगाई जाती हैं।
- मुख्य फसल चावल होती है।
- इस प्रकार की कृषि दक्षिणी, दक्षिण–पूर्वी और पूर्वी एशिया के सघन जनसंख्या वाले मानसूनी प्रदेशों में प्रचलित है।
- भूमि की उर्वरता बनाए रखने हेतु गोबर की खाद व हरी खाद का उपयोग किया जाता है।
- प्रति इकाई उत्पादन अधिक लेकिन प्रति कृषक उत्पादन कम होता है।

❖ विश्व में गहन निर्वाह कृषि वाले प्रमुख क्षेत्र जहाँ चावल मुख्य फसल नहीं है–**उत्तरी चीन, मंचूरियां, उत्तरी कोरिया एवं उत्तरी जापान**

नोट– यहाँ उगाई जाने वाली मुख्य फसल सोयाबीन, जौ एवं सोरगम है।

❖ भारत के उत्तरी मैदान में गहन निर्वाह कृषि के अंतर्गत बोई जाने वाली मुख्य फसल **–गेहूँ**

❖ भारत के दक्षिणी व पश्चिमी शुष्क प्रदेश में गहन निर्वाह कृषि के अंतर्गत बोई जानें वाली मुख्य फसल **–ज्वार और बाजरा**

❖ चावल रहित गहन निर्वाह कृषि की मुख्य विशेषता है–**इनमें सिंचाई की जाती है**

रोपण कृषि

- बड़े–बड़े बागानों के रूप में की जाने वाली कृषि जिसमें एक बार वृक्षों के बागान लगा दिये जाते है और कुछ समय पश्चात् से कई वर्षों तक उनसे उत्पादन प्राप्त होता रहता है–**रोपण कृषि**
- रोपण कृषि किस कृषि के अंतर्गत आती है–**वाणिज्यिक कृषि के अंतर्गत**
- रोपण कृषि के अंतर्गत उगाई जाने वाली फसलें– **चाय, कहवा, काजू, रबड़, केला, कपास, गन्ना, अन्नानास आदि**
- **रोपण कृषि की विशेषताएँ–**
  - यह मुख्यत: एक फसली व्यापारिक कृषि हैं।
  - इसमें कृषि क्षेत्र का आकार बहुत विस्तृत होता है।
  - वृहत पैमाने पर श्रम और पूंजी की आवश्यकता होती है।
  - इसमें उच्च प्रबंध, तकनीकी आधार और वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है।
  - उत्पाद का प्रसंस्करण खेतों पर या निकट के कारखानों में।
  - इसमें परिवहन जाल के विकास की अनिवार्यता होती है।
  - यह मुख्यतया उष्णकटिबंधीय प्रदेशों में की जाने वाली कृषि है।

❖ **रोपण कृषि के प्रमुख उदाहरण –**

- अंग्रेजों ने भारत व श्रीलंका में चाय के बाग, मलेशिया में रबड़ के बाग एवं पश्चिमी द्वीप समूह में गन्ना व केले के बाग लगाए।
- स्पेन व अमेरिकावासियों ने फिलीपींस में नारियल व गन्ने के बाग लगाएं।
- ब्राजील में कॉफी के बागानों को कहा जाता है–**फेजेंडा**

4 विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि

❖ विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि की जाती है–**मध्य अक्षांशो के आंतरिक अर्ध शुष्क प्रदेशों में**

❖ विस्तृत वाणिज्य कृषि के मुख्य क्षेत्र (घास मैदान)–**प्रेयरीज (उत्तरी अमेरिका), पंपास (अर्जेंटीना), स्टेपीज (यूरेशिया), वेल्ड (अफ्रीका), डाउंस (ऑस्ट्रेलिया) और कैंटबरी (न्यूजीलैंड) में**

❖ **विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि की प्रमुख विशेषताएँ–**

- इसमें मुख्य फसल गेहूँ होती है (अन्य फसलें मक्का, जौ, राई, जई आदि)।
- खेतों का आकार बड़ा होता है व सभी कार्य यंत्रों द्वारा संपन्न होते हैं।
- प्रति एकड़ उत्पादन कम लेकिन प्रति व्यक्ति उत्पादन अधिक होता है।

मिश्रित कृषि

- मिश्रित कृषि से तात्पर्य है– **फसल उत्पादन और पशुपालन साथ-साथ करना**
- विश्व में मिश्रित कृषि वाले प्रमुख क्षेत्र–**उत्तरी पश्चिमी यूरोप, उत्तरी अमेरिका का पूर्वी भाग, यूरेशिया का कुछ भाग व दक्षिणी महाद्वीपों के समशीतोष्ण अक्षांश वाले भाग।**

नोट– यह कृषि विश्व के अत्यधिक विकसित भागों में की जाती है।

- **मिश्रित कृषि की प्रमुख विशेषताएँ–**
  - इसमें खाद्यान्न फसलों के साथ चारे की फसल भी उगाई जाती है।
  - इसमें खेतों का आकार मध्यम होता है।
  - गेहूँ, जौ, राई, जई, मक्का, चारे की फसल व कंदमूल बोई जाने वाली मुख्य फसलें हैं।
  - शस्यावर्तन व अंत: फसली कृषि मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
  - इसमें विकसित कृषि यंत्र, इमारतों, रासायनिक व वनस्पति खाद के उपयोग पर अधिक पूंजी व्यय की जाती है।

डेयरी कृषि

❖ **डेयरी कृषि की प्रमुख विशेषताएँ–**

- यह दुधारू पशुओं के पालन पोषण का सर्वाधिक उन्नत प्रकार है।
- पशुओं की अच्छी देखभाल व दुग्ध उत्पादन में अधिक यंत्रों के प्रयोग हेतु अधिक पूंजी की आवश्यकता होती है।
- इसमें पशुओं के स्वास्थ्य, प्रजनन व उनकी चिकित्सा पर अधिक ध्यान दिया जाता है।
- पशुओं की देखभाल हेतु अधिक श्रम की आवश्यकता पड़ती है।

❖ डेयरी कृषि का कार्य मुख्यत: किया जाता है– **नगरीय एवं औद्योगिक केंद्रों के समीप**

नोट– नगरीय क्षेत्र ताजा दूध व अन्य डेयरी उत्पाद के लिए अच्छा बाजार उपलब्ध करवाते है।

❖ वाणिज्य डेयरी कृषि के प्रमुख क्षेत्र– **उत्तरी–पश्चिमी यूरोप, कनाडा, न्यूजीलैंड, दक्षिण–पूर्व आस्ट्रेलिया एवम तस्मानिया**

भूमध्यसागरीय कृषि

❖ भूमध्यसागरीय कृषि के अंतर्गत मुख्य फसलें हैं–**अंगूर, अंजीर**, जैतून आदि

❖ भूमध्यसागरीय कृषि के प्रमुख क्षेत्र है–**भूमध्य सागर का समीपवर्ती दक्षिणी यूरोप और उत्तरी अफ्रीका का क्षेत्र, दक्षिणी कैलिफोर्निया, मध्यवर्ती चिल्ली, दक्षिण अफ्रीका का पश्चिम भाग, ऑस्ट्रेलिया का दक्षिण व दक्षिण–पश्चिम भाग।**

नोट– यह क्षेत्र खट्टे फलों की आपूर्ति हेतु महत्वपूर्ण है।

विशेष–अंगूर की खेती भूमध्यसागरीय क्षेत्र की प्रमुख विशेषता है। अच्छी किस्म के अंगूरों से उच्च गुणवत्ता वाली मदिरा का उत्पादन होता है जबकि निम्न श्रेणी के अंगूरों को सुखाकर मुनक्का और किशमिश बनाई जाती है।

उद्यान कृषि

- **उद्यान कृषि की प्रमुख विशेषताएँ**–
  - यह कृषि नगरों के समीप की जाती है जहाँ इन्हें आसानी से बाजार उपलब्ध होता है।
  - इसमें अधिक मुद्रा प्राप्ति वाले फल, सब्जियाँ व पुष्प उगाए जाते हैं।
  - इसमें नगरीय क्षेत्रों में मांग वाले पुष्प और सब्जियाँ मुख्यतः उगाई जाती हैं।
  - खेतों का आकार छोटा होता है तथा इसमें गहन श्रम और अधिक पूंजी की आवश्यकता होती है।
  - इस कृषि में सिंचाई, उर्वरक, अच्छी किस्म के बीज, हरितगृह, शीत क्षेत्रों में कृत्रिम ताप, कीटनाशक आदि का भी विशेष ध्यान रखा जाता है।
- उद्यान कृषि में कृषि उत्पाद के मुख्य उपभोक्ता होते है–**शहरों में उच्च आय वर्ग**
- उद्यान कृषि वाले प्रमुख क्षेत्र–**उत्तरी पश्चिमी यूरोप, संयुक्त राज्य अमेरिका के उत्तरी पूर्वी भाग, भूमध्यसागरीय प्रदेश**

विशेष–नीदरलैंड का पुष्प उत्पादन में महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ से ट्यूलिप (एक विशेष प्रकार का फूल) पूरे यूरोप के प्रमुख शहरों में भेजा जाता है।

- शहरों के आसपास के क्षेत्र जहाँ केवल सब्जियाँ पैदा की जाती है, वहाँ इस कृषि को कहा जाता है–**ट्रक कृषि**
- कारखाना कृषि कहाँ की जाती है– **पश्चिमी यूरोप एवं उत्तरी अमेरिका के औद्योगिक क्षेत्रों में।**

नोट–इनमें गाय, बैल एवं कुत्ते पाले जाते हैं, जिनकी अच्छी नस्ल का चुनाव, प्रजनन की वैज्ञानिक विधियों, उनके खानपान एवं बीमारियों का विशेष ध्यान रखा जाता है।

सहकारी व सामूहिक कृषि

- जब कृषकों का एक समूह अधिक लाभ कमाने के उद्देश्य से स्वेच्छा से एक सहकारी संस्था बनाकर कृषि कार्य करें तो उसे कहते हैं—**सहकारी कृषि**
- **सहकारी कृषि की प्रमुख विशेषताएँ—**
  - सहकारी संस्था सभी किसानों को समान रूप से सहायता प्रदान करती है।
  - सहकारी आंदोलन का प्रारंभ एक शताब्दी पूर्व हुआ था।
  - सहकारी आंदोलन को सर्वाधिक सफलता डेनमार्क में मिली।
- किस प्रकार की कृषि में उत्पादन के साधनों का स्वामित्व संपूर्ण समाज एवं सामूहिक श्रम पर आधारित होता है—**सामूहिक कृषि में**

नोट—इस प्रकार की कृषि में सभी किसान अपने संसाधनों (भूमि, पशुधन, श्रम) को मिलाकर कृषि करते हैं तथा अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भूमि का एक छोटा सा भाग अपने अधिकार क्षेत्र में भी रखते हैं।

- सामूहिक कृषि का सर्वप्रथम प्रारंभ हुआ— **सोवियत संघ में**
- सामूहिक कृषि का मुख्य उद्देश्य— **कृषि की दशा सुधारना, उत्पादन में वृद्धि करना एवं आत्मनिर्भरता प्राप्त करना**
- सोवियत संघ में सामूहिक कृषि को किस नाम से जाना जाता है—**कोलखोज के नाम से**

Revision Booster Coming Soon

GGD Hai to Mumkin Hai ! निःशुल्क शिक्षा Join Gourav Gyan Dhara

2nd GRADE GK

प्रथम प्रश्न पत्र

TOPIC WISE TEST SERIES

COMBO 1

राजस्थान GK ₹ 70/-
+
विश्व भारत GK
+
राजव्यवस्था ₹ 70/-

₹ 125/-

COMBO 2

राजस्थान GK ₹ 70/-
+
विश्व भारत GK
+
राजव्यवस्था ₹ 70/-
+
मनोविज्ञान ₹ 60/-

₹ 170/-

SUBSCRIBERS 923K | SUBSCRIBERS 310K | SUBSCRIBERS 200K | SUBSCRIBERS 310K

GET IT ON Google Play Install The Gourav Gyan Dhara App Now

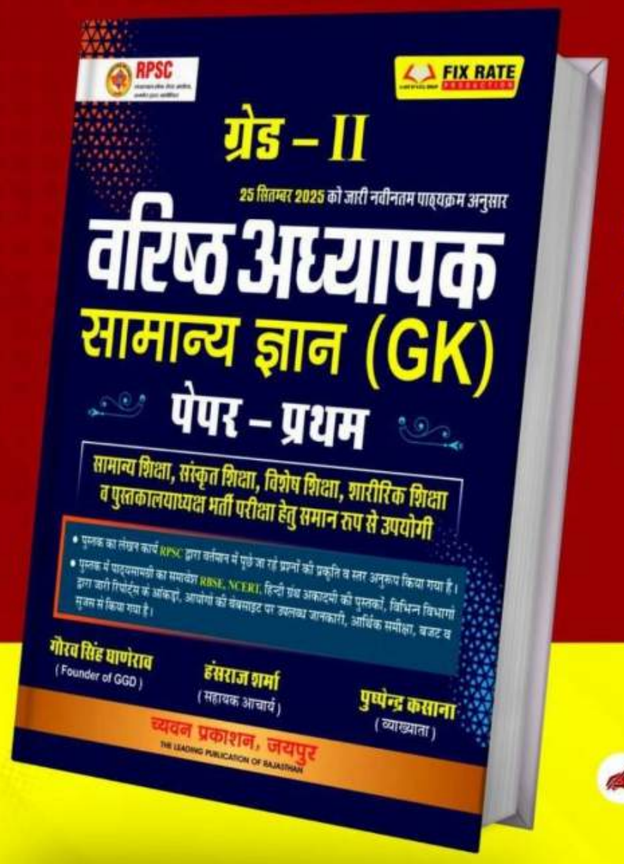

ग्रेड-II

वरिष्ठ अध्यापक

सामान्य ज्ञान (GK)

पेपर–प्रथम

सामान्य शिक्षा, संस्कृत शिक्षा, विशेष शिक्षा, शारीरिक शिक्षा व पुस्तकालयाध्यक्ष भर्ती परीक्षा हेतु समान रूप से उपयोगी

गौरव सिंह घाणेराव
हंसराज शर्मा
पुष्पेन्द्र कसाना

च्यवन प्रकाशन
A UNIT OF M.R.C. GROUP
The Leading Publication of Rajasthan

for more information : +91 707-3066-333 | sugamrajasthan@yahoo.in

अबकी बार LDC पार...

LDC TEST SERIES

Test Series: 01
भूगोल, प्राकृतिक संसाधन, आर्थिक व औद्योगिक विकास (पेपर-1)
- प्रत्येक टॉपिक का टेस्ट
- यथोचित व्याख्या सहित
- Rank Timer & Negative marking की सुविधा

₹51

Test Series: 02
राजस्थान इतिहास कला-संस्कृति + दैनिक विज्ञान (पेपर-1)
- प्रत्येक टॉपिक का टेस्ट
- यथोचित व्याख्या सहित
- Rank Timer & Negative marking की सुविधा

₹51

Test Series: 03
हिन्दी व्याकरण + English Grammar (पेपर-2)
- प्रत्येक टॉपिक का टेस्ट
- यथोचित व्याख्या सहित
- Rank Timer & Negative marking की सुविधा

₹65

MEGA COMBO
TEST SERIES 1+2+3+ COMBO
(उपरोक्त तीनों TEST SERIES COMBO)
- प्रत्येक टॉपिक का टेस्ट
- यथोचित व्याख्या सहित
- Rank Timer & Negative marking की सुविधा

~~₹167~~ ₹151

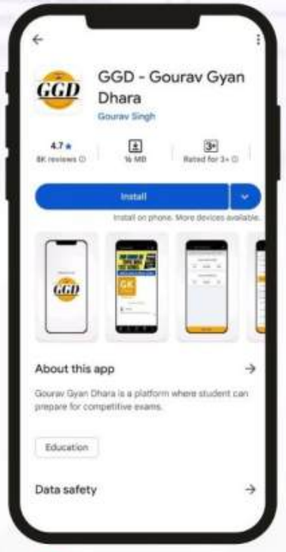

GET IT ON Google Play

Download the GGD App Now

REGISTER NOW!

LAB ASSISTANT GK

TOPIC WISE TEST SERIES

TEST SERIES - 01
राजस्थान का इतिहास, कला व संस्कृति
- प्रत्येक टॉपिक के शानदार टेस्ट
- व्याख्या सहित
- RANK व TIMER की सुविधा

किसके लिए उपयोगी – **लैब असिस्टेंट**
(विज्ञान, भूगोल एवं गृह विज्ञान तीनों के लिए)

PRICE : 51/-

TEST SERIES - 02
राजस्थान भूगोल
- प्रत्येक टॉपिक के शानदार टेस्ट
- व्याख्या सहित
- RANK व TIMER की सुविधा

किसके लिए उपयोगी – **लैब असिस्टेंट**
(विज्ञान, भूगोल एवं गृह विज्ञान तीनों के लिए)

PRICE : 51/-

TEST SERIES - 03
विश्व, भारत GK + मनोविज्ञान
- प्रत्येक टॉपिक के शानदार टेस्ट
- व्याख्या सहित
- RANK व TIMER की सुविधा

किसके लिए उपयोगी – **लैब असिस्टेंट**
(विज्ञान के लिए केवल)

PRICE : 65/-

COMBO - 1
TEST SERIES – 1 + TEST SERIES – 2
(राजस्थान इतिहास, कला, संस्कृति, भूगोल)

PRICE : 90/-

COMBO - 2
TEST SERIES – 1 + 2 + 3
(राज. इतिहास, कला-संस्कृति, भूगोल, विश्व-भारत GK + मनोविज्ञान)

PRICE : 150/-

GET IT ON Google Play INSTALL THE GOURAV GYAN DHARA APP NOW

923K 330K 200K 310K

वनपाल भर्ती 2026

TOPIC WISE TEST SERIES

» राजस्थान का भूगोल, इतिहास, कला व संस्कृति
- TOTAL TESTS : 90+
- TOTAL QUESTIONS : 3500+

PRICE ~~₹199~~ ₹65

» राजव्यवस्था, दैनिक विज्ञान व् राजस्थान की अर्थव्यवस्था
- TOTAL TESTS : 50+
- TOTAL QUESTIONS : 2000+

PRICE ~~₹199~~ ₹65

» MEGA COMBO
ABOVE MENTION BOTH PACKAGE

SPECIAL OFFER PRICE ₹120

Validity Till : 31/01/2027

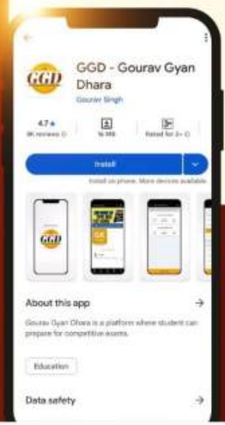

GET IT ON Google Play

Install The Gourav Gyan Dhara App Now

हाईकोर्ट चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी

Topic wise TEST SERIES

सबसे कम कीमत पर सर्वश्रेष्ठ Result देने वाला अभ्यास...

हिन्दी व्याकरण
Topic wise Test Series
~~₹199~~ ₹51

English Grammar
Topic wise Test Series
~~₹199~~ ₹51

राजस्थान कला संस्कृति
Topic wise Test Series
~~₹199~~ ₹51

Mega Combo
हिन्दी + English + राजस्थान कला संस्कृति (सम्पूर्ण सिलेबस)
~~₹199+₹199+₹199=597~~
~~₹51+₹51+₹51=153~~
₹125

GET IT ON Google Play

Download the GGD App Now

OPD-OBJECTIVE PRASHNA DHARA

@OPDBYGOURAVSINGHGHANERAOGGD

1.89 lakh subscribers • 406 videos

GGD
Gourav Gyan Dhara

"Join Our Official TELEGRAM CHANNEL"

TO Get NEW UPDATES !

- New Job Alerts
- Academic News
- Class PDFs
- Practice MCQ Questions & Many More

@https://t.me/gouravgyandhara

Join Now!

गौरव सिंह घाणेराव Founder of GGD
Gouravgyandharaofficial
gouravgyandhara
Gourav Gyan Dhara
gouravgyandhara
gouravgyandhara
JOIN THE
FASTEST
GROWING
EDUCATION
PLATFORM
GGD
Gourav Gyan Dhara
निःशुल्क व नियमित शिक्षा देने में
राजस्थान का न. 1 YOUTUBE CHANNEL